धार्मिक रूप रेखा में हिन्दू स्थापत्य के साथ–साथ जैन मंदिर के निर्माण खजुराहों की धर्म सहिसुनता का रचनात्मक उदाहरण हैं। जिसमें तीर्थकर मूर्तियों का अंकन हिन्दू मंदिरो में और हिन्दू देव–देवियों की सुन्दर अलंकरण जैन मंदिरों में नि चित रूप में एक धार्मिक समन्वय का साख्य हैं । वर्तमान की खजुराहों की विका ा यात्रा में जैन पुरासंपदा का प्रमुख स्थान तथा महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं।

पुरातात्विक संग्रहालय में पॉच विथिकाओं में से जैन विथिका महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। इस विथिकाओं में जैन परम्परा की मूर्तियों को तीन भागों में विभाजन किया जा सकता हैं। प्रथमतः जैन मुनियों की स्वतंत्र मूर्तियां, जिसमें कायोत्सर्ग और योगासन में अंकित किया हुआ प्राप्त होता हैं। द्वितियाः जैन भा ान देवी, जैन युगल यक्ष–यक्षी जैन माताओं की निमार्ण किया गया है। तृतीयतः जैन द्वार भाखा, ललाटविम्ब, जैन सर्वंद्रभद्र मुख्यतः प्रधान हैं।

उपरोक्त जैन प्रतिमाओं की अलंकरण प्रतिमा लक्षन की दृष्टिकोण से भा ाीय तथा ग्रथ कों आधारित कर स्वभाविक रूप से अभिव्यक्त किया गया हैं।

खजुराहो की जैन परम्परा तथा इन साख्यों की स्वरूप जैन मंदिर, जैन मूर्तियां 10वीं 12वीं सदी की मध्य भाग में विका ा हुआ था और इन संपदाओं के निमार्ण में चंदेल भाासकों कों, व्यवसाय वर्ग तथा स्थानीय जैन समाज की सक्रीय सहयोग अभिलेख में प्रकट होंता हैं।

इतिहास तथा पुरातत्व के दृश्टि कोण से खजुराहो जैन कला का एक महत्वपूर्ण केन्द्र रहा होगा । इन वैभव ााली पुरासम्पदाओं को आज की जैन मंदिर समूहो तथा खजुराहो में स्थित विभिन्न संग्रहालय में देखा जा सकता हैं। जैन मूर्तियों का निर्माण करनें की परम्परा का उल्लेख बहुत सारे अभिलेख में पाया गया हैं । जिसमें श्रेश्टि विबन ाहा की भार्या पद्मावती द्वारा आदिनाथ मूर्ति निमार्ण, श्र्श्टि पानीधर द्वारा जैन मंदिर तथा मूर्ति निर्माण और अन्य लेख से श्रेश्टि पाहिल द्वारा संभवनाथ की मूर्ति बनवाने का प्रमाण मिलता हैं इस तरह यें परम्परा लगभग 200 वर्श तक चलती रही जिससे की खजुराहो की जैन पुरासंपदा का उल्लेखनीय मूर्त रूप देखनों को मिलता हैं।

यहॉ प्रदर्ि ात जैन पुराव ोश मुख्यतः बलुआ

पत्थर से निर्मित हुआ है जो अपनी संरचना के आधार पर चंदेलो मूर्तिकला का अनूठा निरूपण हैं । इस विथिका में कुल 13 सर्वोच्य कलाकृतियॉ प्रदर्ि ात है। यह प्रतिमायें तथा कलाकृतियॉ मुख्यतः दिगम्बर सम्प्रदाय सें संबंधित हैं, तथा यह द ााति है कि खजुराहो में दिगम्बर सम्प्रदाय का वि ोश योगदान तथा प्रभुत्व था।

यहॉ प्रदर्ि ात मुख्य जैन प्रतिमायें मूलतः ऋशभनाथ, कुन्तुनाथ, पा र्वनाथ, संभवनाथ, द्वितीथीं मूर्ति है, इन तीर्थांकरों के पश्चात् उनके शासन देवी देवताओं का महत्व था। जिसमें मुख्य जैन तीर्थांकर के साथ अलंकरण सर्वाधिक लोकप्रिय था। यक्ष–यक्षी में केवल गौमुख, चर्केश्वरी, धर्णेन्द्र – पद्मावती एवं मॉतंग– सिध्देयका, कुबेर अंबिका की स्वतंत्र मूर्तियॉ खजुराहो से प्राप्त हुयी। जबकि यहॉ प्रदर्शित गौण प्रतिमाओं में अंबिका, जैन युगल, मोनोबेगा इत्यादि हैं।

इसी तारतम्य में जैन तीर्थांकर महावीर की अलंकरण सुन्दर सुरूचिपूर्ण तथा अनुपातिक ढ़ंग से किया गया है, तथा इस मूर्ति के परिकर उड्यमान पुष्पमालाधारक और घट लिये हुए गज बने हुए है। मूल मूर्ति के पार्श्व में अलंकार शोभित तथा चामरधारी सेवकों का यह सुन्दर अंकन है। इसी क्रम में तीर्थांकर पार्श्वनाथ की सात सर्प फणों की छत्र के नीचे कायोत्सर्ग (दण्डायमान) मूर्ति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। एतद व्यतीत परिकर में अन्य तीर्थांकर की मूर्तियॉ, चामरधारी यक्ष–यक्षी एवं अष्टप्रातिहार्य दृश्टव्य है। जैन मान्यता के अनुसार प्रथम जैन तीर्थांकर ऋषभनाथ की कायोत्सर्ग मूर्ति आकर्षण का केन्द्र है। इस मुख्य मूर्ति के दोनो पार्श्व में यक्ष–यक्षी की मूर्तियों का दर्शाया गया है तथा सिंहासन के नीचे धर्म चक्र के समीप ही जिनों के लाक्षन वृशभ अलंकरण उल्लेखीनय है। इनके अलावा कुछ अन्य उदाहरण में ऋषभनाथ की ध्यान मुद्रा युक्त मूर्ति अत्यन्त कलात्मक तथा प्रतिमा लक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। तृतीय तीर्थकर संभवनाथ की ध्यान मुद्रा में आसीन और सिंहासन पर लांछन अ व उत्तर्कीण है तथा द्विभुर्जाकार यख कुबेर साथ में प्रदर्ि ात किया गया है। क्रमानुसार इस विथिका में सत्रवीं तीर्थकर कुन्तुनाथ अपने लांछन छाग के

साथ द ाया गया हैं तथा इस मनोज्ञ मूर्ति में अश्टप्रतिहायों और यक्ष–यक्षी भी निरूपित हैं ।

प्रमुख तीर्थकरों मूर्तियों के प चात् इस विथिका में कुछ गौण मूर्तिया जिसमें यक्ष–यक्षियॉ (ा ान देवता) स्वतंत्र में द ाया गया है। इसी तार्ततम्य में तीर्थकर निमिनाथ के यक्षी अंबिका को स्वतंत्र रूप में द ाया गया है, जो कि आम्र वृक्ष की छाया में दण्डायमान हैं, उनके वायें में बालक प्रियंकर बना हुआ है तथा इस मूर्ति की पा र्व में मुख्य जैन मुर्तियां समान यक्ष–यक्षी की भी आकृति बनी हैं । इससे यह प्रतीत होता है कि खजुराहो में भा ान देवताओं–देवियों को जिन के समान प्रतिश्ठा प्राप्त को अभिव्यक्त करता है, अन्य एक उदाहरण में अंबिका अपने दाहिनें होथों में आम्रलुम्बी तथा वायें हाथों में बालक प्रियंकर का पकडतें हुए ललित आसन में द ाया गया है।

जैन मात्रिका की इस कडी में अ व वाहिनी यक्षी को मौनोबेगा के रूप में पहचान हुआ है, ये मूर्ति चतुर्भुजाकार है परन्तु तीनों हाथ खंडित है और एक में चक्रकार पदम हैं इसी मूर्ति की दोनों पा र्व में सेविकायें तथा परिकर में देवी की मूर्तियों का विद्यमान है।

यहा प्रदि ात अन्य पुरासंपदा में जैन सर्वत्रभद्र की प्रतिमा आकर्शण का बिन्दू हैं इसकी चारों ओर ध्यान मुद्रा में जैन तीर्थकरों तथा परिकरों में भा ान देवी–देवता, सेविकायें तथा अन्य लघू अश्ट–महाप्रतिहार्य आकृतियॉ बनी है। इसीतरह कुल 52 मूर्तियां सर्वत्रभद्र का पूर्णता भाव का उल्लेख किया गया है।

lxgky; igpekx%&

यह संग्रहालय मध्स प्रदे ा राज्य के छतरपुर जिले में स्थित हैं। यह छतरपुर से 45 किलोमीटर पूर्व की ओर तथा राज्य की राजधानी भोपाल से लगभग 375 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। खजुराहो दे ा के विभिन्न भागों से सडक, रेलमार्ग तथा वायु मार्ग से जुडा हुआ हैं।

संग्रहालय खुलने का समय

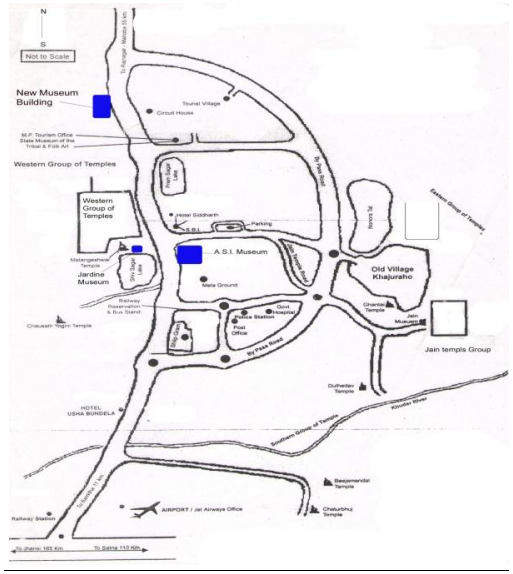

प्रातः 9 बजे से 5 बजे तक (ाुक्रवार अवका ा)

कोई पृथक प्रवे ा भुाल्क नहीं

lgk;d v/kh{k.k iqjkrRofon

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

पुरातत्व संग्रहालय खजुराहो, जिला छतरपुर (म0 प्र0)

फोन न0–07686–272320

ईमेलः–museumkhajurahoasi@gmail.com

vkb,-vius ikphu xkSjo dks mtkxj djsA

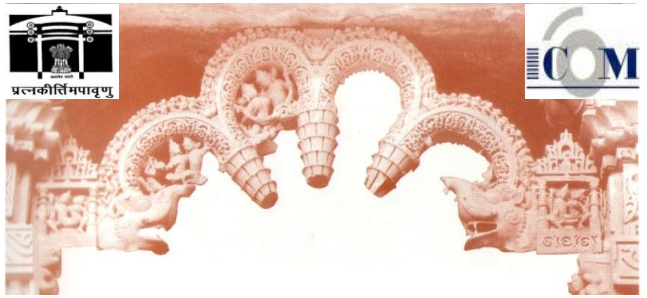

पुरातत्व संग्रहालय खजुराहो की जैन पुरासम्पदा

Hkkjrh; iqjkrRo loZs{k.k
iqjkrRo laxzgky;] [ktqjkgks